क्या दादा लेखराज को प्रजापिता ब्रह्मा कह सकते हैं?

दुनिया का जो भी व्यक्ति ब्रह्माकुमारी संस्था से जुड़ा है, या उनके किसी आश्रम या कार्यक्रम में गया है, या फिर उनके साहित्य का अध्ययन कर चुका है, वह यह जानता होगा कि ब्रह्माकुमारी संस्था के संस्थापक दादा लेखराज को उस संस्था के सदस्यों द्वारा प्रजापिता ब्रह्मा माना जाता है। उस संस्था द्वारा प्रकाशित त्रिमूर्ति शिव के चित्र को तो लगभग सभी ने देखा ही होगा। ब्रह्माकुमारियों के अनुसार परमपिता शिव परमात्मा 5000 वर्ष के मनुष्य सृष्टि चक्र के अंत में अर्थात् वर्तमान पुरुषोत्तम संगमयुग में ब्रह्मा (उर्फ दादा लेखराज) द्वारा नई दुनिया की स्थापना करते हैं, शंकर द्वारा पुरानी दुनिया का विनाश करते हैं और विष्णु अर्थात् लक्ष्मी-नारायण द्वारा आने वाली नई दैवी दुनिया की पालना करते हैं। इस चित्र में भक्तिमार्गीय भक्तिमार्गीय ब्रह्मा के स्थान पर दादा लेखराज को दिखाया गया है, किंतु सन् 1969 में दादा लेखराज के देहावसान के बाद, लगभग 37 वर्ष बीत जाने पर भी उन्हें यह पता नहीं है कि दादा लेखराज की तरह इस संगमयुग में शंकर या विष्णु की भूमिका कौन अदा करते हैं।

त्रिमूर्ति के चित्र में शंकर और विष्णु का पार्ट इस मनुष्य सृष्टि रंगमंच पर कौन अदा करते हैं, उसकी बात छोड़िए। कम से कम, पहले हमें यह तो पता होना चाहिए कि वास्तव में ब्रह्माकुमारियाँ जिस ब्रह्मा की बात करती हैं, वह ब्रह्मा कौन है? क्या ब्रह्मा और प्रजापिता ब्रह्मा एक ही हैं? क्या दादा लेखराज लेखराज केवल ब्रह्मा हैं या प्रजापिता ब्रह्मा? दुनिया भर की ब्रह्माकुमारियाँ यह मानती हैं कि उनके ब्रह्मा बाबा बाबा अर्थात् दादा लेखराज सन् 1969 से सूरज, चाँद, सितारों से पार स्थित सूक्ष्म वतन में सूक्ष्म शरीरधारी के रूप में निवास कर रहे हैं, किंतु ब्रह्माकुमारियों द्वारा प्रकाशित दिनांक 18.06.05, पृ.2 के अंत की रिवाइज्ड ज्ञान मुरली, जो दादा लेखराज के शरीर से निराकार शिव ने सुनाई थी, में कहा गया है : "प्रजापिता तो यहाँ होना चाहिए ना, नहीं तो कहाँ से आए? बाप खुद समझाते हैं, मैं पतित शरीर में आता हूँ। ज़रूर इनको ही प्रजापिता कहेंगे, सूक्ष्मवतन में नहीं कहेंगे। वहाँ प्रजा क्या करेगी?" इससे यह सिद्ध होता है कि इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर प्रजापिता ब्रह्मा का वास्तविक पार्ट अदा करने वाली आत्मा इसी मनुष्य सृष्टि पर एक पतित पतित तन में प्रैक्टिकली मौजूद होनी चाहिए।

ब्रह्माकुमारी संस्था का यह भी मानना है कि सन् 1969 से निराकार शिव और अपना शरीर त्याग चुके दादा लेखराज की आत्मा हर वर्ष पूर्वनिर्धारित दिनों में ब्र.कु.दादी गुलज़ार के तन में प्रवेश कर अव्यक्त वाणी चलाती है। गुलज़ार दादी जी बचपन से ही एक पवित्र ब्रह्माकुमारी है, जबकि ऊपर उल्लिखित उल्लिखित ज्ञान मुरली में शिव स्वयं कह रहे हैं कि मैं तो पतित शरीर में आता हूँ। ब्रह्माकुमारियों द्वारा ही ही प्रकाशित रिवाइज्ड ज्ञान मुरली दिनांक 15.10.69 पृ.2 मध्य में कहा गया है—"इतना ऊँच बाप है तो उनको तो राजा अथवा पवित्र ऋषि के तन में आना चाहिए। पवित्र होते ही हैं सन्यासी। पवित्र कन्या के तन में आवे; परन्तु कायदा नहीं है। बाप सो फिर कुमारी पर कैसे सवारी करेंगे? बाप बैठ समझाते हैं कि मैं किसमें आता हूँ। मैं तो आता ही उसमें हूँ जो कि पूरे 84 जन्म लेते हैं, एक दिन भी कम नहीं।" इससे यह सिद्ध होता है कि शिव बाप ब्र.कु.गुलज़ार दादी, जो कि एक पवित्र कन्या है, के तन में नहीं आते हैं। निराकार शिव द्वारा दादा लेखराज ब्रह्मा के मुख से जो ज्ञान मुरलियाँ सुनाई गई थीं उसका पाँच साल का रिकार्ड उपलब्ध है, जिसे वे अपने आश्रमों में हर पाँच साल में एक बार रिवाइज़ करते हैं। अतः 15.10.69 की उक्त मुरली को जब 21.11.05 को ब्रह्माकुमारियों द्वारा रिवाइज़ किया गया तो उसमें से "पवित्र कन्या के तन में आवे; परन्तु कायदा नहीं है। बाप सो फिर कुमारी पर कैसे सवारी करेंगे?"–शब्दों को काट दिया गया है,

ताकि यह सिद्ध किया जा सके कि शिव बाप गुलज़ार दादी जी के तन में आते हैं। जबकि दादा लेखराज के मुख से सन् 1951 से 1969 तक सुनाई गई ज्ञान मुरलियाँ और गुलज़ार दादी जी के मुख से सन् 1969 से अब तक सुनाई गई अव्यक्त वाणियाँ इस बात की ओर इशारा देती है कि त्रिमूर्ति शिव का साकार मनुष्य के के रूप में प्रैक्टिकल पार्ट इसी सृष्टि पर कहीं और चल रहा है।

वास्तव में, दादा लेखराज ब्रह्मा के द्वारा निराकार शिव ने मुखवंशावली ब्राह्मण वत्सों की रचना के के लिए सन् 1969 तक केवल बेहद की माँ का पार्ट अदा किया और सन् 1976 से राम और कृष्ण की जन्मभूमि, शिव-शंकर भोलेनाथ की कर्मभूमि तथा पतितपावनी गंगा के लिए प्रसिद्ध उत्तर प्रदेश के ऐतिहासिक गाँव कम्पिल से किसी साधारण, पतित, अनुभवी मनुष्य शरीर रूपी रथ में प्रवेश कर गुप्त रूप से से प्रजापिता ब्रह्मा अर्थात् पिता का पार्ट अदा कर रहे हैं और सच्चा गीता ज्ञान और राजयोग सिखा रहे हैं, जिसके लिए उन्होंने आध्यात्मिक ईश्वरीय विश्वविद्यालय की स्थापना की है, किंतु ब्रह्माकुमारी संस्था के सरपरस्त ज्ञान की तीसरी आँख से उस साधारण रथ द्वारा सुनाई जा रही शिव की असाधारण वाणी को समझने के स्थान पर पौराणिक शास्त्रों में प्रसिद्ध कहानियों की तरह ईश्वरीय कार्य में बाधाएँ उत्पन्न कर रहे रहे हैं तथा त्रिमूर्ति शिव की ही श्रीमत का उल्लंघन करते हुए दुनिया भर में त्रिमूर्ति शिव के स्थान पर स्वयं को प्रत्यक्ष कर रहे हैं। दुनिया को विनाश की चेतावनी देने वाले स्वयं संपत्तियाँ तथा सुख के साधन एकत्रित करने में लगे हुए हैं। वे अपने ऊपर परमपिता शिव की छत्रछाया को सिद्ध करने के लिए शिव की वाणी में ही उपरोक्त उदाहरण की तरह परिवर्तन कर रहे हैं, जो शायद दुनिया के किसी धर्मग्रंथ में नहीं होता होगा।

महाभारत कथा में भी प्रसिद्ध है कि महाभारत युद्ध से पहले बहुसंख्यक कौरवों ने श्रीकृष्ण से उनकी अक्षौहिणी सेना और संपत्ति माँग ली तथा अल्पसंख्यक पांडवों ने श्रीकृष्ण का केवल साथ ही माँग लिया। जीत किसकी हुई, यह तो सब जानते हैं। विनाश काले प्रीतबुद्धि विजयंति तथा विनाशकाले विपरीतबुद्धि विनश्यंति।

ओम् शान्ति।